निष्ठा

(National Initiative For School Head's And Teachers' Holistic Advancment)

प्रशिक्षण –डायरी

पुष्पराज मसीह

प्रधानाध्यापक,एकीकृत शाला
हाईस्कूल चल्दू जिला–नीमच

निष्ठा डी.आर.जी.

मॉड्यूल क्रमांक-11

भाषा शिक्षणशास्त्र

मॉड्यूल सामान्य परिचयः-

1. मॉड्यूल विहंगालोकनः-

- भाषा शिक्षणशास्त्र
- उद्देश्य
- सामग्री की रूपरेखा

2.परिचयः-

- भाषाओं का शिक्षाशास्त्र -परिचय
- बच्चे भाषा कैस सीखते हैं
- गतिविधि 1-चिंतन बिन्दु

3.भाषा सीखनाः-

- भाषा सीखना-आयाम
- भाषा शिक्षणशास्त्र
- भारत में भाषा सीखने की स्थितियाँ
- भाषा से जुड़ाव
- गतिविधि 2-एक गतिविधि की योजना
- प्रिंच रिच वातावरण

4.भाषा सीखने के उद्देश्य और सीखने के प्रतिफलः-

- गतिविधि 3-भाषा सीखने के उद्देश्यों का अन्वेषण
- सीखने के प्रतिफल -प्राथमिक स्तर
- सीखने के प्रतिफल-उच्च प्राथमिक स्तर

- पहली,दूसरी और तीसरी भाषा के रूप में भाषाएँ सीखना
- गतिविधि 4 - स्वयं चिंतन बिन्दु
- नमूना

5. कौशल विशेष कार्यः-

- सुनना और बोलना
- गतिविधि 5-लेखन का अन्वेषण
- गतिविधि 6- चिंतन बिन्दु
- अतिरिक्त संसाधन

6. सारांश

7. पोर्टफोलियो गतिविधिः-

8.अतिरिक्त संसाधन

9.प्रश्नोत्तरी

10.मॉड्यूल समापन

चित्र

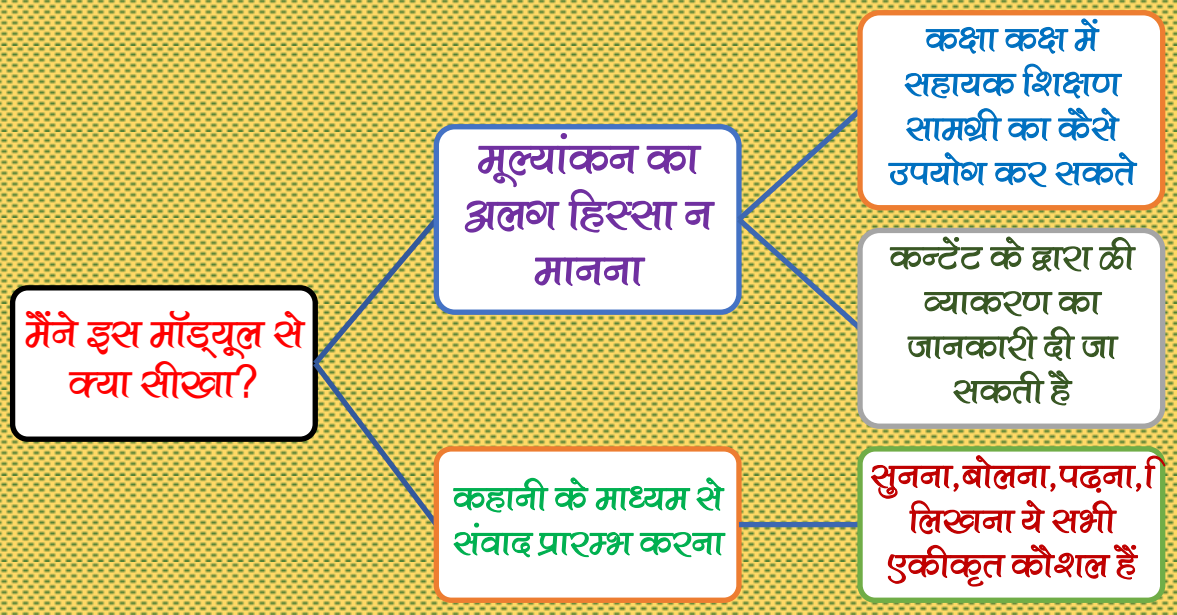

अपनी शाला में विभिन्न गतिविधियों के द्वारा शामिल करना:-

- किसी भी कन्टेंन की अवधारणा को समझाते हुए खेल और विभिन्न गतिविधि के माध्यम से करवाना ताकि खेल-खेल में बच्चें अच्छी तरह से कन्टेंन की अवधारणा समझाया जा सकता है।
- व्याकरण को कन्टेंन की माध्यम से ही समझाना ताकि एक ही कन्टेंन में व्याकरण के विभिन्न रूपों को समझाया जा सकता है।
- गीत व कविता को हाव-भाव व उतार-चढ़ाव के द्वारा प्रस्तुत करूँगा ताकि बच्चों को गीत या कविता को सीखने में आसानी रहे।

भाषा शिक्षण-शास्त्र

भाषा शिक्षा के विभिन्न पक्षों का समझना जैसे कि-भाषा सीखने की प्रकृति ,सीखने में भाषा की भूमिकाऐं ,संसाधन और कार्यनीति के रूप में बहुभाषिकता,शिक्षा नीति में भाषा ,भारतीय संदर्भों में भाषा शिक्षण के उद्देश्य।

शिक्षक साथियों को साक्षरता और भाषा सीखने के लिए एकीकृत कौशल दृष्टिकोण के साथ सतत आकलन से परिचित करवाना।

अलग-अलग स्तरों के लिए सीखने के प्रतिफलों और सीखने-सीखाने की प्रक्रियाओं को बताने योग्य बनाया जाये ताकि शिक्षक साथी आसानी से प्रतिफलों को समझ सकें।

सामान्य सरोकारों की समझ विकसित करना ,जैसेकि - विद्यार्थी,जेंडर संबंधी मुद्दों ,विशेष आवश्यकताओं,समावेशी कक्षा, विद्यालय आधारित पूर्व व्यावसायिक शिक्षा और अन्य ऐसे संगत मुद्दों को जानने का प्रयास करना।

विभिन्न भाषा शिक्षण-शास्त्र की प्रक्रियाओं को समझना और निरन्तर आकलन और सीखने-सीखाने के प्रतिफलों की रिर्पोटिंग करने के लिए सकारात्मक कार्य योजना को सुनिश्चित करना।

सामग्री की रूपरेखा

भाषा अधिगम और सीखने–सीखाने में भाषा की केन्द्रियता,भारतीय संदर्भों में भाषा,सीखने–सीखाने की स्थिति में भाषा में शिक्षानीति,त्रि–भाषा सूत्र और बहुभाषिकता।

- पहली,दूसरी और तीसरी भाषा के संदर्भ में भाषा–शिक्षण।
- भाषा–शिक्षण के उद्देश्य और सीखने के प्रतिफलों को आसानी से प्राप्त करना।
- भाषा कौशल–शिक्षण सुनना,बोलना,पढ़ना और लिखना संदर्भ आधारित व्याकरण शिक्षण ,शब्दावली और साहित्य मूल पाठ का समावेशन करना।
- भाषा आकलन और इसकी प्रक्रियाएँ –सतत आकलन और आकलन के परिणामों की रिपोर्टिंग करना।
- जेंडर,विशेष आवश्यकताएँ ,बहुभाषिकता,विविधता और सीखने–सीखाने के संदर्भों में समावेश जैसेकि– राष्ट्रीय और शैक्षिक मुद्दों को संबोधित करना।

भाषाओं का शिक्षा शास्त्र–परिचय

भाषा सभी मनुष्यों और समाज का अनिवार्य महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। प्रत्येक बच्चा अपनी मातृभाषा /पहली भाषा को स्वाभाविक रूप से किसी गंभीर प्रयास के बिना आसानी से सीख जाता है। जैसे–जैसे हम बड़े होते हैं वैसे–वैसे हम औपचारिक यो अनौपचारिक स्थितियों में कई भाषाऐं सीख जाते हैं। हम भाषा सीखने या इसके अधिग्रहण में ऐसी प्रक्रियाऐं होती शामिल होती है। जिनमें बच्चे अस्पष्ट या स्पष्ट रूप से विभिन्न कार्यनीतियों को अपनाते हैं, जैसेकि–अवलोकन,वर्गीकरण,अनुमान लगाना और उसका सत्यापन करना। शिक्षा में भाषा की भूमिका को समझने के लिए हमें

भाषा की प्रकृति,जीवन और समाज के अन्य पक्षों के साथ इसके इंटरफेस,भाषा सीखने के बारे में मान्यताओं और भाषा सीखने के लिए विद्यार्थी के प्रयासों को समर्थन कैसे दे सकते हैं।

भारत जैसे देशों में कई भाषाऐं प्रचलित हैं और एक विशिष्ट भारतीय कक्षा में बहुभाषी लोग मिल जाते हैं। जब हमारे बच्चे विद्यालय में प्रवेश करते हैं तो वे अपनी एक भाषा अर्थात अपनी मातृभाषा को सीखकर आते हैं। वे अपनी उम्र और संज्ञानात्मक स्तर के अनुसार भाषा को अच्छी तरह सीखते है। जिसे अधिकांश भारतीय स्थितियों में दूसरी भाषा के रूप में जाना जाता है। बच्चों में भाषा के प्रति इतनी जागरूकता हैकि आवाज से शब्द कैसे बनते हैं और शब्द मिलकर एक साथ सार्थक वाक्य बनाते है । इससे पता चलता हैकि उनके पास एक आंतरिक व्याकरण है और वे इसका उपयोग करना जानते हैं।

भाषा सीखना:आयाम

छ्ष्ट 2005 में कहा गया हैकि भाषा शिक्षण मूलतःसारे विषयों का शिक्षण है। यानि की सारे विषयों का अध्यापक । एक तरफ से यो कहें कि सारे विषयों का अध्यापक एक तरह से भाषा का अध्यापक होता है, और भाषा का अध्यापक मूलतःसभी विषयों का अध्यापक होता है। भारत बहुभाषी देश है। जहाँ पर 16से52 भाषाऐं बोली जाती है। एक महत्वपूर्ण बात यह हैकि बहुत से विषयों की बात की जैसे-विज्ञान शिक्षण,समाज विज्ञान शिक्षण,कला शिक्षण,खेल शिक्षण बहुत सारी चीजों को कक्षा कक्ष तक लाना या भाषा से जोड़कर हमें कहीं न कहीं बताना है या भाषा पढते हुए इस ओर जाना हैकि तो जाहिर हैकि भाषा शिक्षण में इन सारे उद्देश्यों को पूरा करना पड़ेगा। प्रथम भाषा,द्वितीय भाषा और तृतीय भाषा के रूप में शिक्षण । इनमें अब अंतर क्या है? प्रथम भाषा के रूप में किस भाषा को पढते हैं। द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ते हैं तो और तृतीय भाषा के रूप में पढ़ते हैं तो हमारे भारत की पूरी की पूरी वस्तुस्थिति देखी जाए तो कैसी है। इस तरह से इन स्तरों पर प्रथम भाषा के रूप में द्वितीय भाषा के रूप में और तृतीय भाषा के रूप में हम पढ़ते है तो इसमें क्या फर्क आएगा । हमारी भारतीय भाषाओं को ध्यान में रखते हुए अगर आप अंग्रेजी शिक्षण जब आप करते हैं तो अंग्रेजी हमारे भारत में एक तरह से द्वितीय भाषा की स्थिति में है। बाकि भारतीय

भाषाओं की कहीं प्रथम भाषा भी है और कहीं-कहीं द्वितीय भाषा के रूप मे प्रचलित है।

1968 की शिक्षानीति में ही जिसकी बात कही गयी है कि जिन कोर कम्पोनेंट को लेकर के हमारी पूरी शिक्षा की पृष्ठभूमि रची जाती है। उन कोर कम्पोनेंट के अलावा और भी बातें उनमे जरूर की गयी हैं। इसमे एक महत्वपूर्ण बात यह कही गई हैकि जिस पर हमें बहुत ध्यान देने की जरूरत हैकि आकलन के बिन्दु पर क्योंकि आज तक हम आकलन को एक अलग से गतिविधि के रूप में देखते आये हैं और उसपर कार्य किया है।परन्तु अब आकलन अलग से एक गतिविधि न होकर पढ़ने-पढ़ाने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पढ़ने-पढ़ाने के साथ ही आकलन कैसा होगा या आकलन कैसे करना चाहिए? गतिविधियों में संवादात्मक स्थिति कैसे होगी परन्तु आपस मे बातचीत करके ,विचार-विमर्श करके अच्छे से अच्छे अवसर प्रदान कर सकते हैं।

बच्चा कैसे सीखता है? इस पर हमारा ज्यादा से ज्यादा ध्यान केन्द्रित होना चाहिए। साथ ही बहुभाषी कक्षा का स्वरूप कैसा होना चाहिए?बहुभाषी कक्षा कैसी हो?प्रिंटरिच का वातावरण कैसा हो?इन सभी बिन्दुओं पर हमें ज्यादा से ज्यादा कार्य करना होगा ।

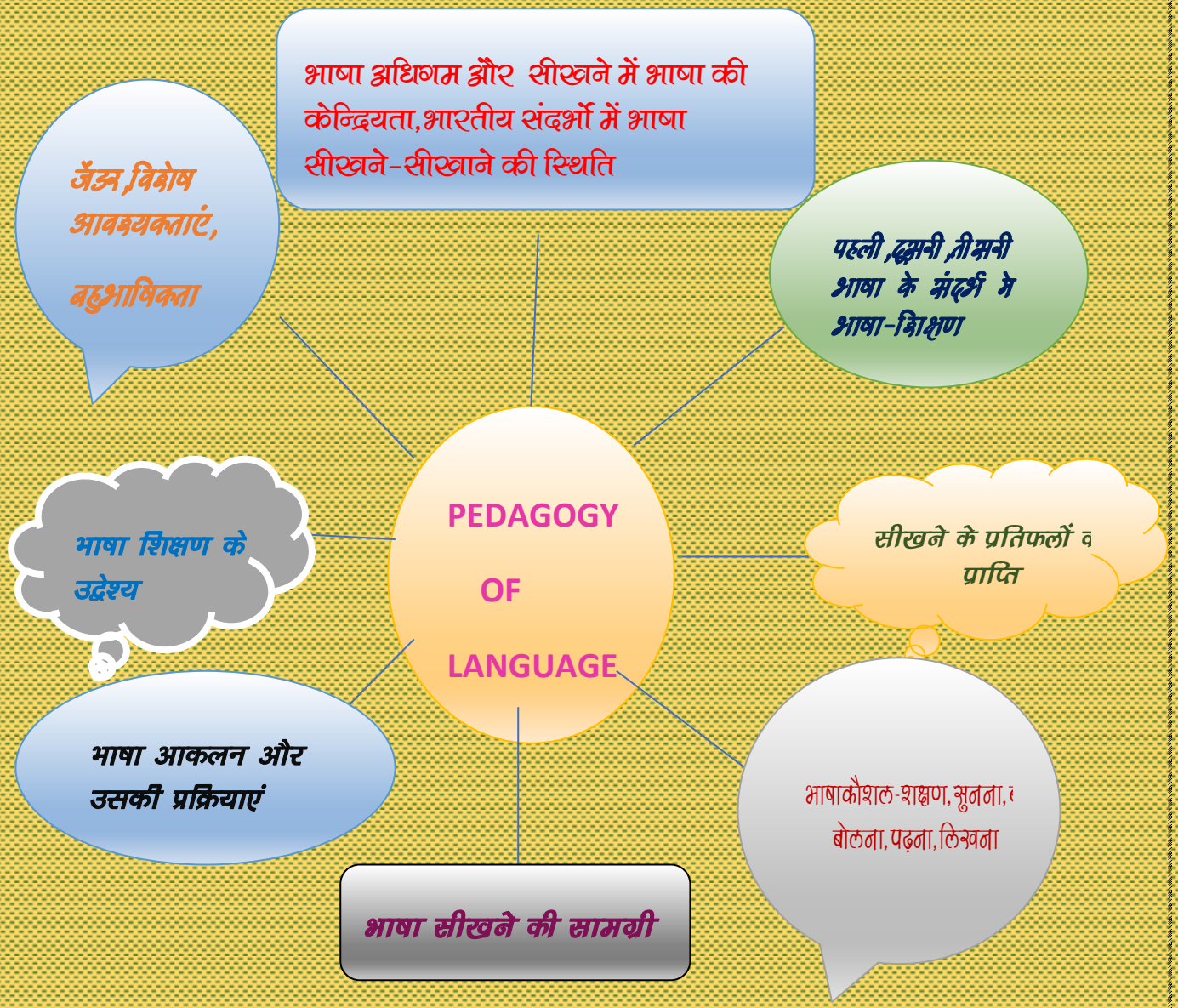
PEDAGOGY OF LANGUAGE
भाषा अधिगम और सीखने में भाषा की केन्द्रियता,भारतीय संदर्भों में भाषा सीखने-सीखाने की स्थिति
जेंडर,विशेष आवश्यकताएं, बहुभाषिकता
पहली ,दूसरी ,तीसरी भाषा के संदर्भ मे भाषा-शिक्षण
भाषा शिक्षण के उद्देश्य
सीखने के प्रतिफलों व प्राप्ति
भाषा आकलन और उसकी प्रक्रियाएं
भाषाकौशल-शाब्दण, सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना
भाषा सीखने की सामग्री

भारत में भाषा सीखने की स्थितियाँ

हमारा देश एक विविध देश है । हमारे यहाँ बहुत सारी भाषाएँ बोली जाती है।

बच्चे अपने परिवेश से भाषा सीखते हैं। हमें भाषा की प्रकृति जीवन और समाज के अन्य पहलुओं के साथ इंटरफेस ,भाषा सीखने के बारे में मान्यताओं

और भाषा सीखने के शिक्षार्थी के रूप में सहयोग कैसे कर सकते हैं। भाषा शिक्षक के रूप में यह समझने की आवश्यकता हैकि भाषा सीखने की स्थिति

कैसी होती है। हमारी कक्षा के संदर्भों में भाषा सीखने के लिए क्या

स्थितियाँ हैं। इस बहुभाषी कक्षाओं को एक संसाधन और रणनीति

के रूप में भी उपयोग कर सकते हैं।

बहुभाषिकता

1. बहुभाषिकता एक प्राकृतिक घटना है।जो कि सकारात्मक रूप से संज्ञानात्मक लचीलेपन और शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित है। 2.द्विभाषिकता के सकारात्मक संबंध को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करता है। 3. द्विभाषी बच्चों को न केवल अलग-अलग भाषाओं का नियंत्रण होता हैबल्कि शैक्षिक रूप से वे अधिक रचनात्मक होते है

पहली,दूसरी,तीसरी भाषा के रूप में भाषाऐं सीखना

बच्चें अपनी भाषा के साथ स्कूल आते हैं और फिर वे दूसरी और तीसरी भाषाऐं सीखते हैं। पहली,दूसरी,तीसरी रणनीतियाँ भिन्न हो सकती है।

समृद्व निवेश आधारित संचार वातावरण

भाषायी निवेश आधारित समृद्व संचार वातावरण का निर्माण प्रिन्ट और ऑडियं और विडियो सामग्री के माध्यम से किया जाता है । जहाँ बच्चों की उम्र रूचि और स्तर जहाँ भाषा देखी जाती है। भाषा पर ध्यान दिया जाता है। और बच्चों द्वारा उपयोग की जाती है। उन्हें भाषा सीखने में मदद मिलती हैं। उन्हें भाषा सीखने में मदद मिलती है और भाषा में दक्षता बढ़ती है।

सम्पूर्ण पाठ्यचर्या में भाषा अधिगम में भाषा अधिगम में भाषा की केन्द्रियता को बढ़ावा देना ।

हर शिक्षक पहले भाषा शिक्षक है
और फिर एक

विषय शिक्षक है। इसलिए

शिक्षार्थियों के भाषा कौशलों सम्पूर्ण
पाठ्यचर्या में विकसित होते हैं।
विज्ञान,पर्यावरण ,सामाजिक विज्ञान,

गणित आदि सीखने के दौरान भी
भाषा सीखना होता है।

“वह चिड़ियाँ जो”

वह चिड़ियाँ जो,

चोंच मारकर

दूध-भरे जुंडी के दाने

रूचि से , रस से खा लेती है

वह छोटी संतोषी चिड़ियाँ

नीले पंखों वाली मैं हूँ

वह चिड़ियाँ

जो कंठ खोलकर

बूढ़े वन बाबा की खातिर

रस उंडेलकर गा लेती हूँ

वह छोटी मुँह बोली चिड़ियाँ

नीले पंखों वाली मैं हूँ

मुझे विजन से बहुत प्या है

वह चिड़ियाँ जो ,चोंच मारकर

चढ़ी नदी का दिल टटोलकर

जल का मोती ले जाती है

वह छोटी गरबीली चिड़ियाँ

नीले पंखों वाली मैं हूँ

मुझे नदी से बहुत ही प्यार है।

कविता के पठन-पाठन में उचित लय,उतार-चढ़ाव से कोई भी कविता को आसानी से समझा जा सकता है। ।अलग-अलग विधाओं को पढ़ना कहानी,नाटक कविता,आदि भी एक कौशल है।

सुनना,बोलना,पढ़ना,लिखना कौशल की बात करते हैं। ये सभी अलग-अलग कौशल नहीं हैं परन्तु ये सभी एकीकृत कौशल है।

भाषा से जुड़ाव के लिए कहानी एक सशक्त माध्यम है। जिसमें बच्चे पूछते हैं। इस मॉड्यूल में "मैं भी" एक कहानी के माध्यम से बताया गया है। दूसरा क्रियाकलाप इसमें बच्चों को प्रेक्टिकल के माध्यम से दिखाया गया। जिसको देखने के बाद बच्चे घर जाकर आसानी से कर सकते हैं

बच्चों के बीच शब्दों की सूची रखना और उसको अपनी भाषा में क्या कहते हैं?शब्द ढूँढकर दिखाना। बच्चे तुरन्त भोजपुरी,निमाड़ी,मालवी जिस क्षेत्र से होंगे वे आसानी से ढूँढकर ले आयेंगे। इसका अर्थ यह हुआ कि हम ,उनको अपनी मातृभाषा से भी जोड़ रहे हैं। मातृभाषा के साथ किसी भी भाषा को पढ़ायेंगे तो वे आसानी और खुशी के साथ सीख सकते हैं।

प्रिन्ट-रिच वातावरण कक्षा में बनाना

- विद्यार्थियों को सुनकर समझकर बातों को जोड़ते हुए संदर्भ स्थापित करने में कुशल होना चाहिए।यहां सुनने ये आशय यह हैकि मौखिक व्याख्यान करना ही नहीं बल्कि सुनकर,समझकर और उससे अर्थ भी निकालना है।
- विद्यार्थियों को भाषा को समझने और उपयोग करने की क्षमता विकसित करने की आवश्यकता होती है। ताकि वे उसका प्रयोग ज्ञान से जुड़ी अलग–अलग प्रक्रियाओं को समझने में आसानी से कर सके ।
- विद्यार्थियों को अपने विचारों को अनायास और संगठित रूप से व्यक्त करने के लिए आत्मविश्वास विकसित करना चाहिए।
- कौशल को बच्चे तभी सीख पाते हैं जबकि उनका उपयोग कई बार किया जाये कहने का आशय यह हैकि हम कुछ कर सीख सकते हैं।
- भाषा की कक्षा में विद्यार्थी को अपनी कल्पना और रचनात्मकता विकसित करने के लिए उचित स्थान मिलना चाहिए। साहित्य,कहानियाँ ,उपन्यास,कविता,नाटक आदि सामग्री कल्पनाशीलता प्रदान करती हैं।

भाषा सीखने के उद्देश्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005
बच्चों में सामर्थ का विकास करना ताकि वे वह जो सुनते है उसे समझ सकें
समझ के साथ पढ़ने की क्षमता का विकास करना
सहज अभिव्यक्ति का विकास करना
सुसंगत लेखन के कौशल को विकसित करना
बच्चों में रचनात्मकता का विकास करना
संवेदनशीलता का विकास करना

सीखने के प्रतिफल

बच्चे अपने साथ बहुत कुछ लेकर विद्यालय आते हैं। अपनी भाषा ,अपने अनुभव और दुनिया को देखने का अपना दृष्टिकोण आदि। बच्चे घर परिवार एवं परिवेश से जिन अनुभवों को लेकर आते हैं वे बहुत ही समृद्ध होते हैं। उनकी इस भाषायी पूंजी का इस्तेमाल भाषा सीखने-सीखाने के लिए किया जाना उचित होगा। बच्चों को ऐसा वातावरण मिलना बहुत ही जरूरी है जहाँ वे बिना रोकटोक के अपनी उत्सुकता के अनुसार अपने परिवेश की खोजबीन कर सकें। विद्यालय में आने पर बच्चे बेझिक अभिव्यक्ति करने में असमर्थ होते हैं,क्योंकि वे जिस भाषा में सहज रूप से अपनी बात,अनुभव,विचार व्यक्त करना चाहते हैं। वह विद्यालय में ज्यादातर स्वीकार नहीं होती है। वातावरण ऐसा प्रदान करना चाहिए कि जिसमें वे अपने को सहज,कल्पनाशीलता,प्रभावशील और व्यवस्थित ढंग से भिन्न-भिन्न प्रकार का लेखन कर सके और अपनी भाषा को प्रभावी बनाने के लिए शब्दों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग कर सकें।

प्राथमिक स्तर पर बच्चों से यह अपेक्षा रहती हैकि वे कही या लिखी गई बात पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें और इसके साथ ही साथ प्रश्न पूछ सकें। भाषा सीखने-सीखाने की प्रक्रिया और माहौल के संदर्भ में यह ध्यान रखना जरूरी होता हैकि कक्षावार या स्तरवार रोचक विषय सामग्री का चयन किया जाना चाहिए।

भाषा सम्प्राप्ति के बिन्दु दिए गए हैं परस्पर उनमें जुड़ाव है और एक से अधिक भाषायी क्षमताओं की झलक उनमें मिलती है।

किसी भी रचना को सुनकर/पढ़कर उस पर गहन चर्चा करना,अपनी प्रतिक्रिया स्वक्त करना,प्रश्न पूछना से भी जुड़ा है।

पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाएँ

- दूसरों की बातों को रूचि के साथ ध्यान से सुनना।
- अपने अनुभव,कल्पना को बेझिझक और सहज भाव से अभिव्यक्त करना।
- अलग-अलग संदर्भों में अपनी बात कहने की कोशिश करना।
- देखी,सुनी और पढ़ी गयी बातों को अपनी भाषा में कहना और प्रतिक्रिया देना।
- स्तरानुसार कहानी/कविता या अनुभव के स्तर पर किसी स्थिति का निष्कर्ष या उपाय करना।
- सुनी और पढ़ी कहानियों और कविताओं को समझकर अपने अनुभवों को साझा करना।

निष्कर्ष निकालना

- चित्र और संदर्भ के आधार पर अनुमान लगाते हुए पढ़ना।
- पढ़ने की प्रक्रिया को दैनिक जीवन की जरूरतों से जोड़ना।
- सुनी और पढ़ी गई बातों को समझकर अपने शब्दों में कहना औरलिखना
- चित्रों को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना।
- अपनी कल्पना से कविता/कहानी का सृजन करना।
- घर और विद्यालय की भाषा के बीच संबंध बनाना।
- विषय सामग्री के माध्यम से संदर्भ के अनुसार नए शब्दों को अर्थ जानना
- अलग-अलग विषयों पर अलग-अलग उद्देश्यों के लिए लिखना।

नमूना

शिक्षकों को अपने भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों और उनके सीखने के चरण या कक्षा में सीखने के प्रति फलों को समझने की जरूरत है ताकि कक्षा की प्रतिक्रियाओं के लिए प्रभावी ढंग से योजना बनाने के लिए मदद मिलती है।

पढ़ने से पहले:-

- बच्चे गृहकार्य करने के बारे में समूह और जोड़े में अपनी पसंद या नापसंद की चर्चा करते हैं और सब के साथ साझा भी करते हैं।
- शिक्षक साथी **QR CODE** या अन्य किसी स्त्रोत से ऑडियो क्लिप चला सकते हैं।

पढते समय:-

- उचित,उच्चारण के साथ ऊँची आवाज में पढ़ सकते हैं।
- कक्षा को जोड़े या समूहों में विभाजित करके बारी- बारी से पढ़ाया जा सकता है। बच्चों को समझने के साथ पाठ को डिकोड की सुविधा भी देता है।
- प्रत्येक हिस्से को पढ़ने के बाद प्रश्न पूछ सकते हैं। यह जानने के लिए कि वे पाठ समझ चुके हैं या नहीं।

पढ़ने के बाद पढ़ने की समझ विकसित करना:-

- समूहों या जोड़ों में बच्चों को पाठ्यपुस्तक पढ़ने के बाद मौखिक रूप से प्रश्नोत्तरी की जा सकती है। फिर अलग-अलग लिखने को भी कह सकते हो।
- पाठ से आगे बढ़े हुए कुछ और प्रश्न भी पूछ सकते हो।

भाषा के साथ काम करना:-

- यह पढ़ने और पाठ्यसामग्री की भाषा के मदों के आधार पर शब्दावली/व्याकरणिक गतिविधि है।
- बच्चों को रिक्त स्थान भरने,खोजने की कहा जाता है।

सुनना और बोलना:-

- बच्चों को कोई कहानी सुनने के लिए कह सकते हैं और कुछ प्रश्नोत्तरी दे सकते हैं।
- कहानी को फिर से सुनाएं और संक्षेप में बच्चों को सार भी बताएँ।
- किसी अन्य भाषा/मातृभाषा में कहानी सुनाएँ।

बोलना:-

- तीन या चार समूहों में सबसे पहले विचार इकट्ठा करने के लिए विचार मंथन गतिविधि करते हैं।
- उसके बाद गृहकार्य के बारे में विचार जानना कि कैसा महसूसकरते हो।

रोल प्ले:-

अध्यापक ,माता-पिता के दृष्टिकोण से गृहकार्य देखने का अवसर प्रदान करता है। समूह बनाकर अभिनय करने की भूमिकाओं को करने के लिये अभिनय के संवादों की फोटोकॉपी देना ।

अतिरिक्त संसाधन :-

बच्चों को 5 मिनिट याद करने और लिखने के लिए अनुमति देते हैं। बच्चें ऐसा करने से उन्हें कोई भी संवाद अच्छी तरह याद हो जायेगा और फिर उन्हें पाठ सुनने के लिए बोलते हैं।कुछ बच्चों ये बातें ऊबाउ लगती है उन्हें केवल खेलना अच्छा लगता है। उन्हें खेल-खेल के द्वारा इस गतिविधि से जोड़ सकते हैं

पढ़ना:-

पढ़ना एक संवादात्मक प्रक्रिया है । जोकि पाठक और पाठ के बीच चलती है। जिसके परिणामस्वरूप पाठ को आसानी से समझा जा सकता है। पढ़ना केवल " डिकोडिन्ग " नहीं है। यह अर्थ बताने का प्रयास है। इस बात का निर्धारण करने के लिए ज्ञान कौशल और कार्यनीतियों का उपयोग करता है। इसलिए इसे हम संवादात्मक और रचनात्मक प्रक्रिया कह सकते हैं।

लिखना:-

लेखन हमें विचारों को व्यक्त करने और पाठकों तक अपने विचारों को पहुँचाने में मदद करता है। बच्चों के लेखन कौशल को बेहतन बनाने के लिए हमें लेखन कौशल की प्रक्रिया को समझना होगा।लेखन कोई ऐसी चीज नहीं है जो पहली बार कागज पर लिखने से शुरू होती है और इसी पर समाप्त होती है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें नियोजन ,प्रारूप,संशोधन,संपादन और पुनर्लेखन शामिल होते हैं।

शब्दावली:-

शब्दों को अधिग्रहण भाषा सीखने के क्षेत्र में प्रारंभिक एवं आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। शब्दावली व्यापक और गहन हो सकती है। बच्चों को नए शब्दों की परिभाषा देना उनकी समझ में सुधार लाने के लिए पर्याप्त नहीं होती है।